Government Digvijay Autonomous P.G. College, Rajnandgaon, Chhattisgarh, India

(Accredited B++ by NAAC)
Affiliated to Hemchand Yadav University
Durg, CG

International Multilingual Conference (Hybrid Mode)

on

Indian Literature in Global Perspective: Significance & Relevance

भारतीय साहित्य का वैश्विक स्वरूप : चिंतन और विमर्श

(13 to 15 February 2025)

Organized by

Department of Hindi, English & Sanskrit

Dr. Anjana Thakur
Principal & Patron

Dr. Anita Shankar
Convener
Head, Dept. of English

Dr. Shanker Muni Rai
Organising Secy.
Head, Dept. of Hindi

Dr. Divya Deshpande
Head, Dept. of Sanskrit

Organizing Committee:

Dr. Neelu Shrivastava, Dr. B N Jagrit, Dr. Divya Deshpandey, Ms. Manjari Singh, Dr. Praveen Kumar Sahu, Dr. Anita Saha, Dr. Aradhana Goswami, Dr. Lalit Pradhan, Dr. Neelam Tiwari, Dr. Gayatri Sahu, Smt. Majula Soni, Dr. Mahendra Nagpure, Dr. Virendra Kumar Sahu, Shri Kaushik Bishi

Advisory Committee:

Dr. Anita Mahishwar, Dr. Shabnam Khan, Dr. Amita Bakshi, Dr. D P Kurre, Dr. Kiranlata Damle, Dr. Preetibala Tank, Dr. Shailendra Singh, Dr. Sanjay Thiske, Dr. S. K. Uke

Souvenir Committee:

Dr. Praveen Kumar Sahu, Dr. Aradhana Goswami, Dr. Lalit Pradhan

प्रस्तावना और उद्देश्य (Concept Note):

हम चाहते हैं कि विज्ञान की अंधी दौड़ में दुनिया जिस गति से अपने मानवीय मूल्यों का उपहास करते हुए जीवन को वैश्विक बाजार की वस्तु साबित करने में लिप्त है, उसमें विराम लगाने के लिए भारतीय साहित्य के विरासतीय तत्वों की तलाश की जाए। हमारा अनुमान है कि भारत का लौकिक और शिष्ट साहित्य जितना समृद्ध है, उतना ही दूसरी और तीसरी दुनिया का लोकसाहित्य भी हो सकता है। इसलिए जरूरी है कि विश्वसाहित्य को एक मंच पर लाकर उसकी विवेचना की जाए। इस संगोष्ठी में हमारा प्रयास होगा कि अखंड भारत के अलावा दुनिया के विकसित देशों में जो प्रवासी भारतीय अपनी ऊर्जा समर्पित कर रहे हैं, वे भी इस आयोजन के सहभागी बनें और अपने अनुभव साझा करें। उम्मीद यह भी है कि जब हम भारतीय साहित्य के इस विमर्शायोजन में विदेशी विद्वानों के ज्ञानकोष का रसास्वादन करेंगे तब हमें दुनिया को देखने-समझने के लिए नये गवाक्ष खुलेंगे।

संगोष्ठी के लिए आमंत्रित शोधपत्र/शोधालेख का विषय क्षेत्र :

1. भारतीय साहित्य और संस्कृति का वैश्विक विस्तार (Global Expansion of Indian Literature & Culture)
2. भारतीय साहित्य का मूलाधार (Core essence of Indian Literature)
3. भारतीय साहित्य और ज्ञान परंपरा (Indian Literature & Knowledge Tradition)
4. भारतीय साहित्य का अतीत एवं वर्तमान (Past & Present of Indian Literature)
5. भारतीय साहित्य का विदेशी साहित्य से अंतर्संबंध
   (Interrelationship Between Indian Literature & Foreign Literature)
6. भारतीय साहित्य एवं संस्कृति (Indian Literature & Culture)
7. भारतीय लौकिक साहित्य का वैश्विक विस्तार (Global Expansion of Indian Worldly Literature)
8. भारत के क्षेत्रीय भाषा-साहित्य का वैश्विक परिदृश्य
   (The Global Perspective of Regional Language Literature of India)
9. भारतीय साहित्य के आलोक में विविध विमर्श
   (Diverse Discourses in the Light of Indian Literature)
10. भारतीय साहित्य पर पाश्चात्य साहित्य का प्रभाव
    (Effect of Western Literature on Indian Literature)
11. नई शिक्षा प्रणाली और भारतीय भाषा-साहित्य
    (New Education Policy & Indian Language Literature)
12. भारतीय साहित्य का विधात्मक स्वरूप (The Structural Form of Indian Literature)
13. भारतीय साहित्य और मीडिया (Indian Literature & Media)
14. भारतीय साहित्य और फिल्म उद्योग (Indian Literature & Film Industry)

इन सबके साथ ही भारतीय साहित्य के वैश्विक स्वरूप और संस्कृति से जुड़े अन्य विषयों पर मौलिक शोधालेख/शोधपत्र आमंत्रित हैं।

पंजीयन शुल्क :

- अंतर्राष्ट्रीय प्रतिभागी-2000 (भारतीय मुद्रा)
- प्राध्यापक/सहायक प्राध्यापक/साहित्यकार और पत्रकार -1500/
- प्राध्यापक दिग्विजय महाविद्यालय एवं एमओयू महाविद्यालय -1000/
- अतिथि प्राध्यापक और शोधार्थी -800/
- विद्यार्थी -300/
- प्रतिभागियों की सुविधा के लिए पंजीयन की ऑनलाइन/ऑफलाइन दोनों व्यवस्था रहेगी।
- संगोष्ठी में प्रतिभागियों की सुविधानुसार ऑनलाइन/ऑफलाइन जुड़ने की व्यवस्था रहेगी।
- सभी प्रतिभागियों को सहभागिता प्रमाणपत्र प्रदान किया जाएगा।

शोधपत्र के संबंध में महत्वपूर्ण बिन्दु:

- संयुक्त शोधपत्र/आलेख के सभी प्रतिभागियों का अलग-अलग पंजीयन आवष्यक है।
- चयनित शोधपत्रों का वाचन तथा पुस्तककार प्रकाशन किया जाएगा।
- शोधपत्र फॉन्ट कृतिदेव-10 हिंदी और संस्कृत अथवा Times New Roman Font Size 12 में कम्प्यूटरीकृत होना चाहिए।
- शोधपत्र केवल एमएस वर्ड फाइल के रूप में स्वीकार्य होगा।
- शोधसार की सीमा अधिकतम-500 शब्द
- पूर्ण शोधपत्र की सीमा- 2000-3000 शब्द
- शोधसार भेजने की अंतिम तिथि : 15 दिसम्बर 2024
- gdcrintconference@gmail.com पर शोधपत्र भेजे जा सकते हैं।

Payment method:

Bank Account Number - 10564179491
Account Holder's Name - Controller, Autonomous DMV
Name of bank - SBI, Main Branch, Rajnandgaon
IFSC - SBIN0000464

For Any Queries, Please contact: Dr. Shanker Muni Rai 98938 63548,
Dr. Anita Shankar 99937 88350,
Dr. Divya Deshpande 74158 84643

संगोष्ठी के विषय विशेषज्ञ

Dr. Gopal Ashque
Member, Language Commission
Shankhmul, Kathmandu, Nepal

Dr. Nupur Ashok
Poet & Satirist, Australia

Dr. S Chitra
Asst. Prof. & program Leader (English)
Sherubtse College, Royal University, Bhutan

Dr. Sadanand Shahi
Ex-Prof., BHU

Prof. I. D. Tiwari
Former Registrar
I.K.S.V.

Prof. Dr. Sudhir Kumar
Sanskrit & Prachya Adhayyan Shala
J.N.U. Delhi

शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय, राजनांदगांव (छत्तीसगढ़)

सामान्य परिचय

राजनांदगांव शिक्षा मंडल द्वारा वर्ष 1957 में स्थापित यह महाविद्यालय उच्चतर शिक्षा के क्षेत्र में छत्तीसगढ़ का गौरवपूर्ण शिक्षण संस्थान है। इसका नाम यहाँ के रियासती वैष्णव महंत राजा दिग्विजयदास के नाम से इसलिए जुड़ा है कि आपने इस नगर में उच्चतर शिक्षा के लिए अपने राजमहल को स्वेच्छा से दान के रूप में समर्पित किया है। महाविद्यालय का यह ऐतिहासिक महल पुरातत्व तथा संस्कृति की दृष्टि से बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

नगर के ऐतिहासिक तालाब 'रानीसागर' और 'बूढ़ासागर' के बीच स्थित इस महाविद्यालय का चौपाटी स्थल सुबह-शाम अपनी प्राकृतिक छटा के चलते न सिर्फ नगर वासियों का स्वास्थ्यवर्द्धन करता है, बल्कि यहां पहुंचने वाले पर्यटकों को भी मोहित कर लेता है। यह अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी उस साहित्यिक नगर में आयोजित है, जहां रामकाव्य परंपरा के प्रतिष्ठित कवि डॉ. बलदेव प्रसाद मिश्र ने साहित्यिक संस्कार दिया है। साथ ही हिंदी कथा शिल्पी और 'सरस्वती' जैसी ऐतिहासिक पत्रिका के संपादक रह चुके डॉ. पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी और हिंदी नई कविता के प्रतिष्ठित कवि गजानन माधव मुक्तिबोध ने न सिर्फ अध्यापन कार्य किया है, बल्कि उन कालजयी साहित्यिक कृतियों का सृजन भी यहीं पर किया है, जिनसे हिंदी जगत गौरवान्वित है।

दर्शनीय महाविद्यालय : मुक्तिबोध के उस ऐतिहासिक निवास को जहां पर आपने आपनी कालजयी कृतियों का सृजन किया है, छत्तीसगढ़ शासन ने 'स्मारक सह संग्रहालय' के रूप में विकसित कर दिया है। इतना ही नहीं, बख्शीजी, मानस मर्मज्ञ डॉ. बलदेव प्रसाद मिश्र तथा मुक्तिबोध की स्मृति को अमिट बनाने के लिए यहीं पर इनकी प्रस्तर शिल्प की मूर्तियां एक जगह स्थापित कर इसे 'त्रिवेणी परिसर' का नाम दिया है। साथ ही साहित्यिक सृजन को प्रोत्साहित करने के लिए यहाँ 'सृजन संवाद' भवन का भी निर्माण किया गया है, जहां नगर की साहित्यिक-सांस्कृतिक संस्थाएं वर्ष भर आयोजन तो करती ही हैं, अतिथि रचनाकारों के सम्मान में सृजन-संवाद भी करती हैं।

पर्यटन स्थल : राजनांदगांव नगर से मात्र 40 किलोमीटर की दूरी पर एशिया का पहला संगीत विश्वविद्यालय, इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़ स्थित है। इसी मार्ग पर 114 किलोमीटर आगे जाने पर 'छत्तीसगढ़ का खजुराहो' भोरमदेव महादेव मंदिर और राष्ट्रीय पुरातात्विक महत्व का स्थल 'पचराही' और यहां से 35 किलोमीटर की दूरी पर डोंगरगढ़ की पहाड़ी पर धार्मिक शक्तिपीठ माता बम्लेश्वरी का मंदिर यहां पहुंचने वाले प्रतिभागी/दर्शनार्थियों के आकर्षण के केन्द्र हैं।

नोट: मुंबई-हावड़ा व्हाया नागपुर रेलमार्ग पर स्थित राजनांदगांव स्टेशन पर सभी महत्वपूर्ण रेलगाड़ियों का ठहराव है। यूपी, बिहार, उड़ीसा तथा झारखंड़ से यहां पहुंचने वाले प्रतिभागियों के लिए गोरखपुर एक्सप्रेस, नवतनवा एक्सप्रेस, हटिया-दुर्ग तथा साउथ बिहार नामक गाड़ियों का अंतिम पड़ाव दुर्ग स्टेशन है, जहां से राजनांदगांव की दूरी 35 किलोमीटर है। छपरा-गोंदिया एक्सप्रस सीधे राजनांदगांव आती है।